अध्याय-द्वितीय

अध्याय - द्वितीय

2 1 साहित्य का पुनरावलोकन

साहित्य का "पुनरावलोकन" प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसधान की प्रक्रिया मे एक महत्वपूर्ण कदम है। साहित्य पुनरावलोकन एक कठिन कार्य है। समस्या से सबधित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसधान का प्राथमिक आधार तथा अनुसधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण मे एक महत्वपूर्ण कारक है। सबधित साहित्य से तात्पर्य अनुसधान की समस्या से सबधित उन सभी प्रकार की पुस्तको, ज्ञान कोषो, पत्र–पत्रिकाओ, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध–प्रबधो एव अभिलेखो आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसधानकर्त्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओ के निर्माण अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एव कार्य को आगे बढाने मे सहायता मिलती है। सबधित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसधानकर्त्ता का कार्य अधेरे मे तीर चलाने के समान होगा। इसके अभाव मे उचित दिशा मे अनुसधान को नही बढाया जा सकता। जब तक उसे ज्ञान न हो कि उस क्षेत्र मे कितना कार्य हो चुका है, किस विधि से कार्य किया है तथा उसके निष्कर्ष क्या आये है, तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही इस दिशा मे सफल हो सकता है।

इसके महत्व को स्पष्ट करते हुए बार तथा स्केट्स (1956) कहते है–

"एक कुशल चिकित्सक के लिये यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र मे हो रही औषधि सबधी आधुनिक खोजो से परिचित होता रहे, उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र अनुसधान के क्षेत्र मे कार्य करने वाले तथा अनुसधानकर्त्ता के लिए भी उस क्षेत्र से सबधित सूचनाओ एव खोजो से परिचित होना आवश्यक है।

किसी भी विषय के विकास मे किसी विशेष प्रारूप का स्थान बनाने के लिये शोधकर्त्ता को पूर्ण सिद्धात एव शोधो से भलीभाति परिचित होना चाहिए। इस जानकारी को निश्चित

निरन्तर

करने के लिये व्यवहारिक ज्ञान से प्रत्येक शोध प्रारूप की प्रारभिक अवस्था मे इसके सैद्धातिक एव शोधित साहित्य को पुर्ननिरीक्षण शब्द को, इस प्रकार परिभाषित किया गया है।

जॉन डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार–

"व्यवहारिक रूप से सपूर्ण मानव ज्ञान पुस्तक और पुस्तकालय मे मिल सकता है। ज्ञान के विस्तृत भण्डार मे उसका योगदान प्रत्येक क्षेत्र मे मानव द्वारा किये गये प्रयासो की सफलता को सभव बनाता है।"

संबधित शोध कार्य

ऐवेतोम्बी (1989) ने मणीपुर के सेकेण्डरी विद्यालयो मे शालेय स्वास्थ्य शिक्षा की सुविधाओ का अध्ययन किया। मणीपुर के पच्चीस विद्यालयो से प्रश्नावली द्वारा आकडे प्राप्त किये गये।

इस अध्ययन का यह निष्कर्ष निकला कि मणीपुर के सेकेण्डरी विद्यालयो मे खेल की सुविधाए अपर्याप्त थी। खेलो का सामान पर्याप्त नही था। खोलो के लिए दो जाने वाली धनराशि भी पर्याप्त नही थी।

धानोकर (1989) ने बुलधाना जिले मे 1983, व 1987 के मध्य शासकीय और अशासकीय सेकेण्डरी विद्यालयो मे खेलो मे उपलब्धियो का अध्ययन किया यह तुलनात्मक अध्ययन था इस अध्ययन मे पाच शासकीय और पाच अशासकीय विद्यालयो को चुना गया और प्रश्नावली द्वारा आकडे प्राप्त किये गये।

इस अध्ययन का निष्कर्ष यह निकला कि अशासकीय विद्यालयो मे खेल सुविधाए अधिक है। जबकि शासकीय विद्यालयो मे खेल उपलब्धिया अधिक है।

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

निरन्तर

सखारे (1989) ने यावात्मल शहर के सेकेण्डरी विद्यालयो मे खेलो मे सुविधाए और छात्रो की भागीदारी का अध्ययन किया। प्रश्नावली द्वारा तीन सेकेण्डरी विद्यालयो से आकडे प्राप्त किये गये।

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि यावात्मल शहर के विद्यालयो मे खेलो के लिये पर्याप्त सुविधाए नही है जिसके परिणामस्वरूप खेलने वालो की भागीदारी भी कम है।

विद्यार्थी (1987) ने बिहार के गया जिले के सेकेण्डरी शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयो मे स्वास्थ्य शिक्षा की सुविधाओ का तुलनात्मक अध्ययन किया। इस अध्ययन मे दस शासकीय और दस अशासकीय विद्यालयो से प्रश्नावली द्वारा आकडे प्राप्त किये गये।

इस अध्ययन का यह निष्कर्ष निकला कि अशासकीय विद्यालयो मे खेल का सामान, क्रीडा स्थल, खेल शिक्षक तथा खेलो की अन्य सुविधाए अपर्याप्त है शासकीय विद्यालयो की तुलना मे।

गुलहाने (1989) ने करजा तहसील मे सेकेण्डरी विद्यालयो मे सुविधाए और खेल से प्राप्त उपलब्धियो का अध्ययन किया। इस अध्ययन मे बीस सेकेण्डरी विद्यालयो से आकडे प्राप्त किये गये। प्रश्नावली, साक्षात्कार तथा स्वास्थ्य शिक्षा शिक्षको द्वारा जानकारी प्राप्त की गयी।

इस अध्ययन का यह निष्कर्ष निकला कि खेल की सुविधाए खेलो की उपलब्धियो पर अधिक प्रभाव डालती है।

पाटिल (1986) ने चालीसगन तहसील के सेकेण्डरी विद्यालयो मे खेल की सुविधाओ और उनसे प्राप्त उपलब्धियो का सर्वेक्षण किया। प्रश्नावली द्वारा चालीसगन तहसील के चौदह सेकेण्डरी विद्यालयो से आकडे प्राप्त किये गये।

इस अध्ययन का निष्कर्ष यह निकला कि खेल की सुविधाए विद्यालय मे पर्याप्त नही थी। खेल का सामान पर्याप्त नही था।

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

निरन्तर

देव (1987) ने त्रिपुरा के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयो मे खेल की सुविधाओ का अध्ययन किया। इस अध्ययन कार्य मे त्रिपुरा जिले के चौदह विद्यालयो का अध्ययन किया और प्रश्नावली द्वारा सूचना प्राप्त की।

इस अध्ययन कार्य का निष्कर्ष यह निकला कि खेल की सुविधाए अपर्याप्त थी। खेल शिक्षको की कमी पायी गयी खेल सामग्री अपर्याप्त पायी गयी।

वर्गिस (1991) ने शालेय स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम बनाने के लिये प्राथमिक शालाओ के छात्रो के स्वास्थ्य का स्तर और उसका उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया।

इस अध्ययन का निष्कर्ष यह निकला कि स्वास्थ्य स्तर एव बुद्धि मे सार्थक सबध है।

निरन्तर